jewan yatra1:arunjaity.qxd 9/26/2010 9:53 PM Page 18

जनसंघ के शीर्ष नेताओं के साथ में पंगत में भोजन करते नानाजी

खोजने में वे कुशल थे। उन्होंने मशीन की विल्टी छुड़ा कर तुरंत एक ट्रक के द्वारा उसे इलाहाबाद भेज दिया और वहां 'सेवा प्रेस' स्थापित कर दिया, जिसका उपयोग संघ की भूमिगत सामग्री के मुद्रण के लिए होने लगा। उन्हीं दिनों नानाजी इलाहाबाद गए और वहां चांद प्रेस के मालिक रामरक्खा सहगल से संपर्क किया। उस समय संघ के पक्ष में खड़ा होने वाला सहगल जी का अंग्रेजी साप्ताहिक 'क्राइसिस' अकेला पत्र था। 12 जुलाई, 1949 को संघ पर से प्रतिबंध उठने पर नानाजी ने 'स्वदेश' पुनः प्रकाशित कराने की तैयारी शुरू कर दी।

1950 में संघ-दृष्टि से पश्चिमी उत्तर प्रदेश भाऊराव के कार्यक्षेत्र में सम्मिलित किए जाने के कारण भाऊराव ने दीनदयाल जी को मेरठ भाग का दायित्व संभालने के लिए भेज दिया और लखनऊ में नानाजी अकेले रह गए। कलकत्ता जाकर उन्होंने एक नई मशीन खरीदी। 'स्वदेश' के लिए आर्थिक साधन जुटाने में उनके गोरखपुर के संबंध काम आए। भाई हनुमान प्रसाद जी पोद्दार एवं गोरखपुर के अनेक मारवाड़ी स्वयंसेवकों के धनाढ्य संबंधी कलकत्ते में रहते थे, उनकी आर्थिक सहायता से ही 'स्वदेश' का घाटा पूरा हो पाता था। अगस्त 1950 में 'स्वदेश' का प्रकाशन पुनः आरंभ हुआ और वह 2 वर्ष तक चला। उन दिनों नानाजी के साथ अटल जी, गिरीशचंद्र मिश्र, ज्ञानेन्द्र सक्सेना, महेन्द्र कुलश्रेष्ठ, सुरेन्द्र मिस्तल, आदि पुरा संपादक मंडल सदर बाजार में ब्रिटिश काल के एक क्लब के जीर्ण-शीर्ण विशाल बंगले में निवास करता था। इस प्रकार 1948 के अंत से 1951 में जनसंघ के गठन तक नानाजी ने 'राष्ट्रधर्म' प्रकाशन के प्रबंध निदेशक का दायित्व सफलतापूर्वक निभाया। प्रकाशन के क्षेत्र में भी नानाजी ने अपनी कलात्मक दृष्टि का परिचय दिया। बम्बई के दलाल स्टूडियो में संघ की प्रार्थना के चित्र और ब्लॉक बनवा कर अपने भारत प्रेस से ही अत्यंत आकर्षक बहुरंगी पुस्तिका का प्रकाशन करके दिखाया।

लखनऊ में रहते हुए भी नानाजी का गोरखपुर विभाग के कार्यकर्ताओं से संपर्क निरंतर बना रहा। वे उनके दुःख-सुख में सहभागी रहे। उनकी समस्याओं को हल करते रहे। ऐसे ही एक कार्यकर्ता कृष्णकांत प्रचारक जीवन से गृहस्थ जीवन में प्रवेश करना चाहते थे, किन्तु जीविकार्जन का उपयुक्त साधन उन्हें नहीं दिख रहा था। नानाजी ने उनका विवाह आयोजित किया और पति-पत्नी दोनों की शिक्षा व संस्कारक्षमता का उपयोग करने के लिए एक शिशु मंदिर की कल्पना की।

तत्कालीन सरसंघचालक रज्जू भैया के साथ

इस प्रकार भारत में पहले सरस्वती शिशु मंदिर का श्रीगणेश 1950 में गोरखपुर में नानाजी के मार्गदर्शन में हुआ। इस शिशु मंदिर के अनुकरण पर देश भर में स्वतंत्र रूप से हजारों सरस्वती शिशु मंदिरों की विशाल श्रृंखला खड़ी हो गई। विद्या भारती के मार्गदर्शन में भारत का विशालतम गैरसरकारी शिक्षा आंदोलन बन गया है।

अब एक बिल्कुल नया क्षेत्र नानाजी की प्रतीक्षा कर रहा था और वह था वोट और दल पर आधारित राजनीति का। अंतर-वाह्य दबावों के कारण राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को एक नए राष्ट्रवादी राजनीतिक दल के निर्माण में सहयोग देना पड़ रहा था। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की अध्यक्षता में 'भारतीय जनसंघ' नामक नए दल को अक्टूबर 1951 में अखिल भारतीय स्वरूप प्राप्त हो गया। संघ के जिन कार्यकर्ताओं को डॉ. मुखर्जी का सहयोग करने के लिए चिन्हित किया गया, उनमें दीनदयाल जी के साथ नानाजी देशमुख का नाम भी था। मार्च 1952 में पहला आम चुनाव होना था। उत्तर प्रदेश से उसकी तैयारी के लिए नानाजी पूरे मनोयोग से कई महीने पहले से जनसंघ में सक्रिय हो गए। संगठनशास्त्र में पारंगत नानाजी को उत्तर प्रदेश के संगठन-तंत्र का दायित्व दिया गया। उन्होंने अथक परिश्रम करके प्रत्येक जिले में जनसंघ का संगठन खड़ा किया। उनके कुशल नेतृत्व में उत्तर प्रदेश में जनसंघ के विधायकों की संख्या 1957 में 14 से बढ़कर 1967 में 100 पहुंच गई। नानाजी ने जनसंघ के बाहर अन्य राजनीतिक दलों के नेताओं से भी संबंध स्थापित करने का प्रयास किया। कांग्रेस में डॉ. संपूर्णानंद, घी. चरण सिंह, लाल बहादुर शास्त्री आदि से सीधे संबंध स्थापित किए। 1956 में पं. नेहरू की सहकारी खेती का खुलकर विरोध करने का साहस दिखाने पर वे चरण सिंह को बधाई देने पहुंचे। समाजवादी नेता डॉ. राम मनोहर लोहिया से परिचय करने के लिए लखनऊ में उनके कॉफी हाऊस अड्डे पर जा पहुंचे। अपना परिचय देकर कहा कि मैं आपसे संबंध बनाना चाहता हूँ। डॉ. लोहिया ने उपहास करते हुए कहा कि "तुम जनसंघ के हो यानी संघ के हो तब तुम्हारी-हमारी दोस्ती कैसे जमेगी?" नानाजी ने कहा कि "मैं संघ का हूँ और अंत तक रहूंगा, फिर भी आपसे संबंध चाहता हूँ।" सचमुच उन्होंने डॉ. लोहिया को अपने निकट खींच लिया। 1962 के चुनाव में पं. नेहरू के विरूद्ध संत प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारीजी को चुनाव लड़ने के लिए तैयार करने का प्रयास करते समय डॉ. लोहिया ने नानाजी को बुलाया। अगस्त